गीतांजलि श्री का कथा साहित्य में योगदान

शोधार्थी : विणा मेहराज
कश्मीर विश्वविद्यालय

गीतांजलि श्री जी का कथा-साहित्य में एक जाना माना नाम हैं | गीतांजलि श्री विविधोन्मुख प्रतिभा की धनी हैं | इनके कथा-साहित्य में जीवन और उसके विविध पहलुओं के मध्य एक अदभुत तारतम्य हैं | पिछले दशक की कथा लेखिकाओं में गीतांजलि श्री कथ्य एवं शिल्प दोनों स्तरों पर तथा कथा-साहित्य में भी अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं | गीतांजलि श्री जी के पाँच उपन्यास 'माई' (1993), 'हमारा शहर उस बरस' (1998), 'तिरोहित' (2001), 'खाली जगह'(2006), 'रेत समाधि'(2018) है | इनके पाँच कहानी- संग्रह 'अनुगूँज'(1991), 'वैराग्य'(1999), 'यहाँ हाथी रहते थे'(2012), 'मार्च माँ और साकुरा' तथा 'प्रतिनिधि कहानियाँ' है व 'अनुवादित साहित्य भी है |

माई उपन्यास गीतांजलि श्री का पहला उपन्यास है, जो सन 1993में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में एक सामन्तीय ढाँचे के एक सम्पन्न परिवार की तीन पीढीयों की कहानी है | परिवार में दादा,दादी एक पीढ़ी, बाबू , माई दूसरी पीढ़ी तथा भाई-बहन (सुबोध,सुनैना) तीसरी पीढ़ी-कुल छः प्राणी हैं | बाहर दादा और भीतर दादी का हुक्म चलता है | माई सबकी आज्ञाकारिणी हैं | सबकी सेवा करते और सबका भोझ ढोते उसकी कमर झुक गई है | बाबू अपने में सिमित स्वत्त्वविहिन व्यक्ति है | जैसे-तैसे इंडस्ट्रियल कामप्लेक्स में नौकर हो गए थे | उपन्यास में कथा-लेखिका सुनैना (नैरेटर) अपनी स्मृतियों के सहारे माई को केन्द्र में रखकर अपने परिवार की अंतरंग कथा कहती है | एक प्रकार से इसे एक सामन्तीय परिवार की तीन पीढ़ियों की नारी चेतना की कथा भी कह सकते हैं | पहली पीढ़ी डयोढ़ी की सीमाओं में कैद किन्तु अपने में संतुष्ट हैं | दूसरी पीढ़ी ऊपर से शांत, शीतल किन्तु भीतर सुलग रही है | तीसरी पीढ़ी बाहर निकलकर भी घुटनभरी निजता में कैद है | सुनैना इस तीसरी पीढ़ी की

नारी है, जो निजता की कैद से उभरने के लिए बैचेन है | वह अनुभव करती है कि माई में भी आग थी, जिसका दुसरे के लिए जलना उसने देखा पर, जिसका अपना जलना, अपने के लिए उसने नहीं देखा | यह आग संक्रमित होकर सुनैना में भी जल रही है | यही उसे बैचेन रखती है | यही उसे मुक्ति-पथ पर अग्रसर करेगी |

यह गीतांजलि श्री का दूसरा उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' सन 1998 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में हमें साम्प्रदायिकता, उत्पीड़न और जाति-भेद का बेबाक वर्णन मिलता है | साम्प्रदायिकता के कारण आम आदमी के मन में घृणा पैदा होती है | जो विनाशक हो सकती है, इसी तथ्य का सशक्त चित्रण गीतांजलि श्री ने इस उपन्यास में किया है | यह साम्प्रदायिक धार्मिक कट्टरता और उदार मानवीयता की द्वंद्व कथा है | यह मनुष्य के क्षितिज पर घनीभूत होते अंधेरे और उसे चीरकर निकलते उजाले की त्रासद कथा है | कथा में श्रुति, हनीफ,ददद्दू,शरद,प्रो.नंदन आदि प्रमुख पात्र हैं | ददद्दू धर्म निरपेक्षता के चरित्र में है | ददद्दू के अतिरिक्त सभी पात्र प्रतीकात्मक चरित्र में है | जो साम्प्रदायिक दंगों के विभिन्न पक्षों को प्रकाश में लाने का प्रयास करते हैं | हनीफ और श्रुति पति-पत्नी है | शरद दोनों का दोस्त है | हनीफ विश्वविद्यालय में समाज-शास्त्र विभाग में प्रोफेसर है | हनीफ का मित्र शरद भी उसी विभाग में है | दोनों समान विचारों के बुद्धिजीवी है | शहर में एक 'मठ' है | शहर में दंगे करवाना, जलूस निकलवाना, भड़काऊ भाषण देना, लोगों को दुसरे समुदायों के प्रति भड़काना आदि सारी गतिविधियाँ 'मठ' के द्वारा ही संचालित होती है | 'मठ' के पास एक विश्वविद्यालय है जो साम्प्रदायिक तनाव का फायदा उठाता है | शहर में दंगे होने लगते है | विश्वविद्यालय का समाज-शास्त्र विभाग दंगों की जाँच करके रिपोर्ट पेश करता है | रिपोर्ट अख़बार में छपती है | शरद को हिन्दू होने के कारण छोड़ दिया जाता है | परंतु मुसलमान होंने के कारण साम्प्रदायिक ताकतों का सारा आक्रोश हनीफ को अपना लक्ष्य बनाता है | उसको अनेक प्रकार से मानसिक यातनाएँ दी जाती है | समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो.नंदन भी इसी

अवसर का लाभ उठाते है | विश्वविद्यालय में रोटेशन पद्धति लागू हो गई है उसके बाद हनीफ का नबर है | वह नहीं चाहते कि कोई दूसरा उसका अध्यक्ष बने | वे छात्रों को भीतर भीतर भडकाते हैं | छात्र हनीफ की कथाओं का बहिष्कार करने लगते हैं | हनीफ अकेला पड़ने लगता है उसे संरक्ष्ण देने के लिए मुसलमान नेता आगे आते हैं | सारा शहर हिन्दू और मुसलमान नेताओं में बँट जाता है | मठ के महंत की हत्या कर दी जाती है उसे शहीद बना दिया जाता है | पूरी घटना को राजनीतिक रंग दिया जाता है | शहर में तनाव चरम पर है | पुलिस हनीफ को संभल कर रहने का सुझाव देती हैं | शहर में जगह-जगह दंगे होने के कारण सारा माहौल उस बरस का दम घोटू हो जाता है | इस तरह इस उपन्यास में गीतांजलि श्री ने साम्प्रदायिकता का चित्रण करते हुए समाज का आईना पाठक को दिखाने का प्रयास किया है! 'तिरोहित' गीतांजलि श्री का तीसरा उपन्यास है, जो सन 2001 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में एक कस्बे में एक छत के नीचे दो युवा स्त्रियाँ रहती हैं | 'चच्चों' घर की मालकिन है, 'ललना' उसके आश्रय में रहती है | दोनों के बीच तटस्थ काम प्रेरित अनुराग है | वे मन और शरीर की माँग को स्थगित न करते हुए सीमाये लाँघती है और एक-दुसरे में समा जाती है | वे सीमा लाँघने में सुख को सहजता से लेती है! दोनों एक-दुसरे से इस सीमा तक बंधी है कि चच्चों की मृत्यु के बाद ललना भी तिरोहित होने को तत्पर हो जाती है | स्त्री समलैंगिकता को अकुण्ठ भाव से चित्रित करने वाला यह पहला उपन्यास है |

'खाली जगह' गीतांजलि श्री का चौथा उपन्यास है, जो सन 2006 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास का केन्द्रीय रूपक बम है | एक बम कितनों की जिन्दगी बर्बाद कर सकता है, इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है | उपन्यास की कथानुसार एक परिवार में माँ, बाप एवं उनका अठारह साल का एक बेटा है, वह आगे की पढ़ाई करने के लिए शहर जाना चाहता है | माँ-बाप उसे दूर भेजना नहीं चाहते पर बेटे की जिद्द के आगे वे हार

मानकर उसे विश्वविद्यालय में फार्म बरने के लिए बेज देते हैं | एंट्रेंस परीक्षा के लिए विश्वविद्यालय में सुबह से आवाजाही शुरू थी कुछ बच्चे कैफे शॉप में बैठकर पहचान बढ़ा रहे थे, तभी कैफे शॉप में बम के फटते ही सब छितर जाता है ,हमेशा के लिए वह पल जैसे थम जाता है | ऐसी हालत में बस एक जगह खाली थी, तीन बरस के एक बच्चे के माप की, मानो वह बच्चा अकेला चश्मदित गवाह था | उस कैफे में उन्नीस लोगों की मौत हो चुकी थी अठारह लोगों की पहचान होने के बाद बस एक लाश की पहचान नहीं हो पाई थी दूसरी पहचान तीन साल के बच्चे की जो जीवित होकर भी अपनी पहचान नहीं बता सकता था | माँ-बाप उस अंतिम लाश को पहचान कर स्वीकार कर लेते है कि यह उनके बेटे की लाश है साथ ही वे उस तीन साल के बच्चे को भी अपना बेटा समझकर ले जाते है, पालते है पर माँ-बाप का मन अपने बेटे के लिए हमेशा खाली रहता है | माँ-बाप के होते हुए वह छोटा बेटा भी स्वयं को अकेला अनुभव करता है | इस तरह एक साथ होते हुए भी यह परिवार बिखर गया था | एक बम ने पूरे परिवार को बिखरा दिया था जिसका असर पूरी जिन्दगी भर लोगों के जीवन पर पड़ा था |

इन सभी बातों को गीतांजलि श्री इस उपन्यास के माध्यम से बड़ी सरलता के साथ चित्रित किया है |

'रेत समाधि' गीतांजलि श्री का पाँचवा उपन्यास है, जो सन 2018 में राजकमल प्रकाशन द्वारा नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ | इस उपन्यास में लेखिका ने हर साधारण औरत में छिपी एक असाधारण स्त्री की महागाथा कही है | इस उपन्यास में एक अमर प्रेम प्रसंग व् रोजी जैसी अविस्मरणीय चरित्र में अंकित है | इस उपन्यास की कथा, इसका कालक्रम,इसकी संवेदना सब अपने निराले अंदाज़ में चलते हैं | इस उपन्यास में लेखिका ने अस्सी वर्ष की होने चली विधवा दादी की कहानी कही है जो उपन्यास के आरम्भ में न उठने की बात कहकर बाद में अपने इन्हीं शब्दों की ध्वनि बदल कर कहती है कि अब तो नई उठूंगी | दादी उठती है बिलकुल नई ,नया बचपन, नई जवानी,

सामाजिक, धार्मिक वर्जनाओं-निषेधों से मुक्त, नए रिश्तों और नए तेवरों से पूर्ण स्वछंद | इस उपन्यास में रोजी बुआ का आगमन अनेक नये विचार उत्पन्न करता है जिस रोजी बुआ को अक्सर बेटी अपनी माँ के आसपास देखती है | उसी रोजी बुआ की शक्ल के आदमी को रज़ा टेलर के नाम से देखकर हैरान हो जाती है इस बात का पता तब चलता है जब रोजी की हत्या हो जाती है | लेखिका ने इस उपन्यास में तीसरे लिंग का भी वर्णन किया है जो समाज में रहते हुए अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं | उनके कानूनी अधिकारों का भी वर्णन किया है पर कानून समज में कितने प्रभावशाली रहते हैं यह भी बताने का प्रयास किया है | रोजी ने अपना अपना दिवंगत शरीर मैडिक्ल रिसर्च के लिए दान किया था अंत में लावारिसों की तरह बिना किसी धार्मिक संस्कार के उसका शरीर विधुत अग्नि शमन दाह गृह में फूंक दिया जाता है | रोजी की मृत्यु के पश्चात माँ अपनी बेटी के साथ पाकिस्तान जाने की जिद्द करती है अपनी बेटी के साथ पाकिस्थान पहुँचते ही बेटी को ऐसा अनुभव होता है कि जैसे माँ सड़क, बार्डर , गलियों और वहाँ के लोगों से परिचित है | माँ पाकिस्तान में अनवर से मिलने की जिद्द करती है जो कि एक लकवाग्रस्त था माँ अनवर से मिलकर न मिल पाने की मांफी माँगती है | अनवर भी हल्के से होठों से माफी माँगता है पर उसी रात अनचाहे दो लोगों का साया सड़क पर आते ही एक साया चिल्लाता है कि भागो | गोली निकलती है माँ उछलकर पहाड़ी से छलाँग लगाती है माँ के निचे गिरते ही लेखिका के उपन्यास का शीर्षक पूर्ण हो जाता है-'रेत समाधि' | इस तरह उपन्यास में सरहदे हैं जिन्हें लाँघकर यह कृति अनूठी बन जाती है |

इसी तरह गीतांजलि श्री का पहला कहानी संग्रह 'अनुगूँज' है | इनके तीनों कहानी संग्रहों में जीवन की एक अदभुत तारतम्यता है उनकी रचनाशीलता में जीवन तो है, किन्तु मृत्यु बोध भी | एक कहानी में तो वह लिखती है कि मृत्यु जीवन का एक हिस्सा है | वह नये अंदाज की कहानियाँ ही नहीं लिखती अपितु उसे माँजती है और कुछ नया बनाती है | इनके कहानी संग्रह इस प्रकार है |

अनुगूंज गीतांजलि श्री का पहला कहानी संग्रह है जो सन 1991 में प्रकाशित हुआ | इसमें कुल दस कहानियाँ है प्रत्येक कहानी का आधार स्त्री है 'प्राइवेट लाइफ' कहानी में नायिका स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती नजर आती है, तो 'हाशिये पर' कहानी में दाम्पत्य-दाम्पत्योत्तर सम्बन्धों में जटिलताएँ दृष्टय होती है | 'दरार' कहानी में वर्ग विषमता की दरारों के विविध पहलुओं को दर्शाता है| समाज, परंपरा, रूढ़ि, रीति-रिवाज आदि से लेकर पिता, पति, बेटे तक नारी की हर भूमिका को लेखिका ने वास्तविकता के साथ प्रस्तुत किया है | इस कहानी- संग्रह में नारियाँ या तो अपने आप में विद्रोह कर रही है या फिर समाज का सामना कर रही है |

'वैराग्य' गीतांजलि श्री का दूसरा कहानी-संग्रह है जो 1999 में प्रकाशित हुआ|इस कहानी-संग्रह में कुल 15 कहानियाँ संकलित हैं | इस कहानी-संग्रह में विषयों की विविधता दिखाई देती है! इस कहानी-संग्रह में स्त्री-पुरुष एक-दुसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हुए नजर आते है | इस कहानी-संग्रह में लेखिका द्वारा अलग-अलग बिन्दुओं को टोह लेने की लालसा तो दिखाई देती है पर फटाफट नतीजा समझाने की कोई जल्दबाजी नही दिखती उनकी कहानियों में कहीं-कहीं जटिल आधुनिकता के आयाम है, तो कहीं-कहीं मानव सम्बन्धों की अनुभूतियाँ हैं | लेखिका ने कहानियों में शाश्वत मुद्दों को विषय बनाया है | जैसे- मृत्यु बोध, जीने की आशा, आत्मीयता की चाह आदि हर विषय पर ताज़ी संवेदना से भरकर होकर अपनी लेखनी चलाई है | वैराग्य की विशेषता है- भाषा की ध्वनि | लेखिका ने भाषा की ध्वनि का इस तरह प्रयोग किया है कि जैसे कविता का भास होता है और कविता रस प्रतीत होती है |

'यहाँ हाथी रहते थे' यह गीतांजलि श्री का तीसरा कहानी संग्रह है जो सन 2012 में प्रकाशित हुआ | यह एक ऐसी कहानी है जिसमें एक शहर के शंघाई बन जाने की कथा को व्यक्त किया गया है | साम्प्रदायिक विभाजन रेखा से, गाँव दो पाटों में बंटा हुआ है | दो गाँव के बीच नदी पर पुल ने दोनों गाँवों को आपस में जोड़ रखा था | दोनों

तरफ के लोग खेती करते, प्यार से रहते,अपनी सब्जियाँ पुल पर बेचने आते | एक तरफ मन्दिर की घंटियाँ तो दूसरी तरफ खुदा से दुआ माँगी जाती पर अचानक सम्प्रदाय की भावना ने दोनों गाँवों के लोगों के जीवन का महत्व ही बदल दिया | जिन्दगी इतनी आसान होते हुए भी लोग उसे सम्प्रदाय से जोड़कर किस तरह कठिन बना देते है | यही बात लेखिका ने इस कहानी में बताने की सफल कोशिश की है | यहाँ हाथी रहते थे इसमें 11 कहानियों का संकलन है | ये कहानियाँ विरोधी मनोभावों और विचारों को परत दर परत अघाड़ती है | भाषा और शिल्प के अनुसार ढलते जाना यह इस कहानी-संग्रह की विशेषता है | 'इति' में मौत के वक्त की बदहवासी दिखाई देती है | 'तितलियाँ' और 'बुलडोजर' में असमय मौत का भय और दुख का वर्णन है | ' थकान' कहानी में शादी के बाद प्रेम के अवसान के अवसाद को व्यक्त किया गया है | लेखिका ने इस कहानी में जापान के प्राकृतिक सौंदर्य का भी वर्णन किया है | 'इतना आसमान' में लेखिका ने लगातार हो रही प्रकृति की तबाही और उससे विद्रोह के दुख को व्यक्त किया है | 'मैंने अपने आप को भागते हुए देखा' कहानी का नायक अपने ही दादा के स्थापित नियम-मूल्यों से आक्रांत रहता है | जिससे उसके अंदर हीन भावना है | 'चकरघिन्नी' में उन्माद की मन:स्थिति चित्रित हुई है | 'मार्च माँ और साकुरा' में लेखिका का चौथा कहानी-संग्रह है | इस में लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि एक स्त्री का कायान्तरण उसके अंतर्मन से है न कि चालू स्त्री से | कायाकल्प कभी भी हो सकती है | उसकी कोई उम्र नहीं होती | गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानियों का प्रथम संस्करण 2010 में और दूसरा संस्करण 2018 में प्रकाशित हुआ इसमें 11 कहानियाँ का संकलन हैं | यह गीतांजलि श्री का पाँचवा कहानी संग्रह हैं | यह एक खास सिग्नेचर ट्यून की कहानियाँ है | 'नाम', 'चकर घिन्नी', 'लौटती-आहट', 'दहलीज', 'दिशाशूल' ये सभी कहानियाँ स्त्री मन के उन अव्यक्त कोनों की ओर इशारा करती है और उन पीड़ाओं की अभिव्यक्ति करती है जिनकी ओर अक्सर ध्यान नहीं जाता | 'कसक' कहानी हमे एक ऐसे चरित्र से परिचित कराती है जो जीवन तो भरपूर जीती है पर अंत में

तेरहवी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर लेती है | वह मृत्यु को जीवन का हिस्सा मानते हुए जीवन के बीचोबीच जीती हुई उसी सहजता के साथ मृत्यु के बीचोबीच चली जाती है बिना एक आंसू बहाए | 'इति' और 'भितराग' बुढ़ापे के संत्रास और सनकों को एक साथ गुत्थमगुत्था करके लिखी गई कहानियाँ हैं | 'पीला सूरज' भी मृत्यु बोध की कहानी है लेकिन अपने कथ्य और संरचना में बिलकुल अलग | 'बेलपत्र' पारिवारिक जीवन में साम्प्रदायिक अन्तरलय की कहानी है | इसमें एक प्रगतिशील मुस्लिम स्त्री एक हिन्दू युवक से प्रेम विवाह तो करती है पर समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता के काँटे उसे जगह-जगह से लहूलुहान कर देते है यह कहानी एक बड़े यथार्थ से हमारा सामना कराती है| 'दारा' एक प्रतीकात्मक कहानी है जिसे प्रतीकों से ही समझा जा सकता है | 'दारा', 'चौक', 'चकरघिन्नी', 'शान्तिपाठ' और 'दहलीज' जैसी कहानियाँ एक अलग तरह के पाठकीय अनुशासन की माँग करती हुई पाठकों को भी रचना में साझेदारी के लिए न्यौता देती है | गीतांजलि श्री के 'माई' उपन्यास का हिन्दी से अंग्रेज़ी में 'काली फाँर विमेन' में अनुवाद हुआ है यह अनुवाद नीता कुमारी ने सन 2002 में किया 'काली फाँर विमेन' को साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया | 'तिरोहित' उपन्यास का अंग्रेज़ी में अनुवाद राहुल सोनी ने 'द रूफ बिनीथ देयर फीट' 2013 में किया | 'खाली जगह' का अंग्रेज़ी में अनुवाद निवेदिता मेनन ने 'द एम्प्टी स्पेस' सन 2011 में किया | इसके अतिरिक्त फ्रेंच, उर्दू, बंगला, गुजरती और सर्बियन भाषा में भी अनुवाद हुआ है | हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषा में उनकी गहरी पैठ का परिचय मिलता है | दूसरी ओर हिन्दी भाषा में उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का परिचय देती है | उनके कहानी-संग्रहों में कुछ कहानी-संग्रहों का हिन्दी से अंग्रेज़ी, जर्मन और जापानी भाषा में अनुवाद हुआ है | वह स्वयं भी एक अच्छी अनुवादक है और एक सफल कहानीकार एवं प्रख्यात उपन्यासकार भी है |

इस प्रकार गीतांजलि श्री का कृतित्व बहुआयामी है | उनकी रचना भूमि बदलती रही है | उसी के अनुरूप उनके भाषा और शिल्प में भी परिवर्तन होता रहा है |

इस दृष्टि से हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं में उनका स्थान विशिष्ट और विरल है | उनका कथा-साहित्य समाज को एक नया तेवर देता है |